आज कल और आज प्रेम के रूप

यदि आप लोगों की जाँच करते हो, तो आपके पास उनसे प्यार करने का समय नहीं होता। दूसरों को प्यार करने का भावार्थ है कि मैं जो कुछ चाहता हूँ, वह उनके लिए बहुत-बहुत अच्छा है, यह एक स्वीकारोक्ति की भावना है, जो हर पल हमारे साथ ही है।

- ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

आप यदि यह कहो कि आप एक प्रेम करने वाले व्यक्ति हो, आप हमेशा दूसरों से ऐसा ही व्यवहार करते हो, जैसा आप चाहते हो, तो शायद प्रेम के कुछ मायने हैं। आज प्रेम का बदला हुआ रूप ऐसा है, जिसे लोग प्रेम के साथ जोड़ते हैं, लेकिन वास्तव में वह प्रेम से बिल्कुल अलग है। किसी बहुत बड़े संत का कहना है कि प्यार, न्यायालय, संत, महात्मा, मनुष्यों से बहुत ऊपर है, जो सब पर शासन करता है। प्रेम के बारे में अक्सर करके सभी के मन में छोटी आयु से ही कुछ भ्रान्तियाँ बैठ गयी हैं, जो आए दिन तनाव पैदा करती हैं तथा सम्बन्धों में द्वन्द्व भी होता है। जिसमें पहला कुछ ऐसा है, जिसमें कोई व्यक्ति किसी से अपनी इच्छा व्यक्त करता है कि मैं आपसे प्रेम करता हूँ, अर्थात् मैं आपको चाहता हूँ, लेकिन सच्चा प्रेम, चाहता नहीं है। वह तो पहले से ही पूर्ण है, वह तो देता ही है, ना कि किसी से कुछ प्राप्त करना चाहता है। यह एक बहुत बड़ी भ्रान्ति है। वहीं दूसरा, प्रेम को लोग मोह के साथ जोड़ देते हैं। उदाहरण के लिए मैं उनसे प्यार इसलिए करता हूँ क्योंकि वो ये काम बहुत अच्छा करती हैं या खाना अच्छा बनाती हैं। अर्थात् खाना न बने या काम ना हो, तो प्रेम कम हो जाये, नहीं... ये लगाव है, ना कि प्रेम। यदि किसी कारण लोग डरते हैं, अर्थात् भय हो जाता है, तो प्यार भय कैसे पैदा करता है। वहीं तीसरा स्तर है, प्यार निर्भरता से अलग है, अर्थात् किसी चीज़ से प्रेम अभिव्यक्त नहीं होता, सभी कहते हैं इस चीज़ से हमें खुशी मिलती है, अर्थात् चीज़ खत्म तो प्रेम खत्म। नहीं..., प्यार

किसी चीज़ पर निर्भर नहीं होता है, वह बस होता है। वहीं चौथा स्तर है, प्रेम को किसी पहचान की ज़रूरत नहीं होती, अर्थात् कोई ये कहे कि मैं अपने राष्ट्र से प्रेम करता हूँ, अर्थात् यह प्यार है, एक पहचान है। हम राष्ट्रीयता के रूप में पहचान कर रहे हैं, ना कि प्यार कर रहे हैं। अर्थात् आप बताइये... स्वयं की कोई राष्ट्रीयता होती है? जैसे ही हम पहचान करते हैं, तो अहंकार पैदा हो जाता है। अर्थात् राष्ट्र नहीं था, तो भी प्यार था, है, और रहेगा। यह प्यार की भ्रान्तियाँ हैं जो हमने पाले हुए हैं। प्यार निर्भर नहीं है, वह बस है, पहले से था, लेकिन पहचान भूलने के कारण और क्षणिक संतुष्टि के कारण हम सभी से मिलते हैं, उनसे कुछ पाना चाहते हैं। अरे... प्रेम, निष्कर्ष, दया के कार्यों से, बिना शर्त क्षमा दान से तथा असीम कृपा से अनुभव होता है। आप यह मान लीजिए कि जब हम किसी इरादे से या किसी उम्मीद से प्यार करते हैं, तो वह प्यार, प्यार नहीं है, क्योंकि प्यार को किसी कारण की ज़रूरत नहीं है। बस हम प्रेम स्वरूप ही थे, और रहेंगे। बस हमें हमारी स्वयं से प्रीत भूल गयी, इसलिए प्यार भूल गया।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दे

शामली-उ.प्र.। शिव जयंती कार्यक्रम के दौरान यू. एन. चेयरमैन कुलदीप मान को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राज दीदी।

मन की बात

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

► **प्रश्न:** मैं एक कुमार हूँ। मेरी स्थिति न जाने क्यों ऐसी हो गई है कि न तो लौकिक में और न अलौकिक में मन लगता है, कुछ भी करने की इच्छा नहीं होती है। मैं इस स्थिति से बाहर आना चाहता हूँ, कोई उपाय बतायें?

उत्तर: आपको कुछ दिन जल्दी उठना होगा। ये स्पष्ट है कि आप देर से उठते होंगे क्योंकि आपका योग नहीं लगता। उठकर आप बाहर खुली हवा में घूमें, प्रकृति के सौंदर्य का आनंद लें। स्वयं से बातें करें...ओह..ये जीवन कितना सुंदर है...इसमें मुझे भगवान मिले... मेरे जैसा खुशनसीब कोई नहीं... मैंने अनेक बार भगवान को देखा... वाह मेरा भाग्य...मन में सुंदर विचारों का प्रवाह आने दो। अनेक लोगों के साथ कठिनाई ये है कि वे सुंदर विचार उत्पन्न करना नहीं जानते और इसका कारण है सत्साहित्य (मुरली) का अध्ययन नहीं व व्यर्थ में रूचि ज़्यादा। तो सवेरे यदि आपका योग नहीं लगता तो उसे छोड़ दो, स्वमान के संकल्पों का आनंद लो। फिर मुरली को क्लास में जाकर सुनो..इस फीलिंग से सुनो कि भगवान मुझसे बातें कर रहा है व मैं आत्मा भृकुटि सिंहासन पर बैठकर मुरली सुन रही हूँ। सारे दिन के लिए एक स्वमान ले लो। कर्म करते उसे अनेक बार याद करो। आप इस स्थिति से शीघ्र ही बाहर आ जाएंगे।

► **प्रश्न:** मैं एक कुमारी हूँ। मेरा मन दिन में एक बार उदास हो ही जाता है, मुझे अकेलापन भासता है...मुझे यह पसन्द नहीं। मैं सदा खुश रहना चाहती हूँ...उपाय बतायें।

उत्तर: युवाकाल में हार्मोन्स के परिवर्तन के कारण या किसी आंतरिक विकार के प्रभाव के कारण ये स्थिति आती है। कभी-कभी पास्ट जन्मों का कोई विकर्म जब जागृत हो जाता है तो भी ये स्थिति आती है। युवक इस स्थिति के ज़्यादा शिकार होते हैं। यदि किसी विशेष समय पर आपकी ये स्थिति आती हो तो उससे पूर्व कुछ अच्छा म्यूज़िक या गीत सुनें, फिर कुछ प्रिय चीज़ पढ़ें, इससे वो उदासी का पर्दा हट जाएगा। जैसे मैंने कहा - अमृतवेले योग व मुरली को विशेष महत्व दो। रात को सोते समय अपने प्रिय स्वमान को पच्चीस बार याद करके सोयें और फिर सवेरे उठने पर भी उसे पच्चीस बार याद करना। इसका प्रभाव स्थिति पर बहुत सुंदर आयेगा। उदासी का कारण किसी देहधारी से प्यार भी है और जब उस सम्बन्ध में अलगाव हो जाता है तो इनाम के रूप में मिलती है-उदासीनता। इसलिए जान लें कि इस समय देहधारियों से कामुक प्यार विनाशकारी है। अब ही तो समय आया है जब हम प्रभु-प्रेम का सुख ले सकते हैं। इसलिए मनुष्यों के प्यार के पीछे न भटको, उसमें धोखा ही मिलेगा। अब तो अपने परमपिता से जन्म-जन्म का श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त करने की उमंग में रहें। याद रहे कि देहधारियों से प्यार, मन को भटका देगा, अस्थिर कर देगा, जिसका परिणाम आपको अब जीवन भर और बाद में पूरा कल्प भुगतना पड़ेगा।

► **प्रश्न:** मैं एक गृहणी हूँ। मैंने लव मैरिज की थी, अब हम दोनों के बीच सदा ही मनमुटाव रहता है। इसका बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। मैं इस सम्बन्ध में प्रेम भरना चाहती हूँ। मैंने कुछ समय से ज्ञान भी लिया है।

उत्तर: आज के समय में नब्बे प्रतिशत लव मैरिज सफल नहीं होती। क्योंकि जब प्यार होता है तब दोनों ही भावुक होते हैं। ये कामुक प्यार मनुष्य को अंधा बना देता है। तब उन्हें एक दूसरे के स्वभाव संस्कारों का व व्यवहार का ज्ञान नहीं होता। एक वर्ष में ही एक दो की सत्यता समझ में आ जाती है, स्वार्थ व कामनाएँ पूर्ण नहीं होती और टकराव होने लगता है। विदेशों में अशान्ति का यही मूल कारण है। अब आप निश्चय कर लो कि हमें साथ रहना है तो एक को तो झुकना ही पड़ेगा। आप जानती हैं इस टकराव का कारण अहं है। आपने ज्ञान लिया है तो पहले आप झुकें, थोड़ा चुप रहें, बात-बात में डिबेट न करें, अपने को सत्य सिद्ध करने की कोशिश न करें। अपने पति के गुणों को देखें व प्रतिदिन एक समय निश्चित कर उन्हें शुभभावनाएँ दें व मन में उनके लिए प्यार पैदा करें। इसके लिए संकल्प करें कि ये भी एक अच्छी आत्मा है, भगवान की संतान है। बस कुछ ही दिन में टकराव समाप्त हो जाएगा और आप दोनों अपने परिवार सहित सुख भरा जीवन जी सकेंगे।

► **प्रश्न:** मैं एक माता हूँ, बहुत समय से ज्ञान में हूँ। कुछ वर्ष पूर्व मेरे पति ने शरीर छोड़ दिया था, पाँच वर्ष हो गये। मैं उन्हें भूल नहीं पा रही हूँ, मेरा मन अशान्त रहता है, योग भी नहीं लगता। मुझे तीन लड़के हैं...मैं क्या करूं?

उत्तर: माताजी...आपने ज्ञान लिया है, आप जानती हैं मृत्यु पर किसी का अधिकार नहीं। जब कर्मों का हिसाब पूर्ण हो जाता है, तब उस आत्मा को जाना ही होता है। आपको उनसे अति मोह था, यही आपकी अशांति का कारण है। आपकी अशांति से तो आपका पति लौटेगा नहीं, इसके विपरीत आपके वायब्रेशन्स उस आत्मा को जो कि अब बच्चे रूप में है, अशांत करेंगे। यदि सचमुच आपका उस आत्मा से प्यार था तो उसे शांति के वायब्रेशन्स दो। कई माताओं की ऐसी ही मनोस्थिति है। इस कारण वे जन्म-जन्म के भाग्य से स्वयं को वंचित कर रही हैं। इससे बाहर निकल कर अपने बच्चों को प्यार दो और उनकी पालना करो। इस मनोस्थिति के कारण कइयों के घर में उदासी का माहौल रहता है। ज्ञानी आत्मा के ये लक्षण नहीं हैं। हमने कई माताएँ ऐसी भी देखीं जिन्होंने पति के जाने के बाद अपनी स्थिति को बिगड़ने नहीं दिया और अपने समाज को दिखा दिया कि वे श्रेष्ठ ज्ञानी हैं। अब आप इस तरह चिन्तन करें...एक पति चला गया तो मुझे भगवान भी तो मिल गया। अब भगवान ही मेरा प्रियतम है, मुझे अब उसके प्यार में ही मग्न रहना है। वह मुझे बहुत प्यार करता है, वह मेरा रोज़ श्रृंगार करता है, वह मेरे लिए स्वर्ग का राज्य भाग्य लाया है। यह कल्प-कल्प की बाज़ी मुझे गंवानी नहीं है। अव्यक्त मुरली पढ़ते रहो, घर में अच्छे-अच्छे गीत सुनो। अपने बच्चों को प्यार दो।

Contact e-mail
bksurya8@yahoo.com